खण्ड-6, अंक-1, वर्ष-2018, मु0पृ0 1-11, D.O.I. : 10.22445/avsp.v6i1.13888 शोध पत्र

भुवाड़ा बाबा (धार, म0प्र0, भारत) पावन निकुंज में संरक्षित जैवविविधता का अध्ययन

अनसिंह चौहान[1], जाग्रति त्रिपाठी[2] एवं नरपत सिंह डावर[3]
[1]बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल–462026, म0प्र0, भारत
[2]यूनिक महाविद्यालय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल–462026, म0प्र0, भारत
[3]शासकीय महाराजा भोज महाविद्यालय, धार–454001, म0प्र0, भारत
ansinghchouhan@gmail.com

प्राप्त तिथि–30.06.2018, स्वीकृत तिथि–02.10.2018

सार– पावन निकुंज स्थानीय समुदाय सामाजिक रीति–रिवाजों द्वारा संरक्षित वनों का एक छोटा हिस्सा है। यह व्यवस्था अत्यंत ही प्रभावी रूप से संचालित की जाती है। यह प्राकृतिक संसाधनों के स्व–स्थानिक संरक्षण विधि का अनुपम उदाहरण है। इस प्रकार की प्रकृति संरक्षण व्यवस्था भारत सहित सम्पूर्ण विश्वमें देखी जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में भुवाड़ा बाबा(धार, म0प्र0) पावन निकुंज में संरक्षित जैवविविधता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुल 83 पादपों तथा 30 प्राणियों की उपस्थिति अंकित की गई है। जिसमें एक कवक सहित 23 शाक, 09 झाड़ियां, 11 लताओं तथा 39 वृक्षों को देखा गया। इसी प्रकार 02 कीटों, 05 सरीसृपों, 16 पक्षियों एवं 07 स्तनधारी प्राणियों को देखा गया। इस पावन निकुंज में वर्षपर्यन्त कई धार्मिक व सामाजिक रीति–रिवाजों के चलते अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

बीज शब्द– भुवाड़ा बाबा, पावन निकुंज, जैवविविधता, संरक्षण।

Study of conserved Biodiversity in Bhuvada baba sacred grove (Dhar, M.P.)

Ansingh Chouhan[1], Jagrati Tripathi[2], Narpat Singh Dawar[3]
[1]Barkatullah University, Bhopal-462026, M.P., India
[2]Unique Degree College, Barkatullah University, Bhopal-462026, M.P., India
[3]Maharaja Bhoj Government Degree College, Dhar-454001, M.P., India
ansinghchouhan@gmail.com

Abstract- Sacred grove is small part of forest which is conserved by local community though their social rituals. It is conducted effectively. It is excellent example of *In-situ* conservation of natural resources.This kind of nature conservation practice has been observed worldwide including India. Present paper embodies study on conserved biodiversity of Bhuvada baba sacred grove at Dhar destrict of Madhya Pradesh. In this area 83 plants and 30 animalswere observed, including one species of fungi, 23 herbs, 09 shrubs, 11 climbers and 39 trees. Likewise 02 insects, 05 reptiles, 16 birds and 07 mammal specieswereidentified from this area. Many religious and social activations/ rituals are organized in this sacred grove around the year.

Key words- Bhuvada Baba, Sacred grove, Biodiversity, conservation.

1. **परिचय**–भारत भूमि विविध जलवायु परिस्थितियों से संपन्न है। अतः उसी अनुसार प्राकृतिक संसाधन में भी विविधता पाई जाती है। इस देश में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की प्रबल तथा समृद्ध परंपराएं देखने को मिलती हैं। भारत में निवास करने वाली अनेकादि जनजातियों में प्रकृति संरक्षण की विविध परंपराएं गहराई से व्याप्त हैं। पावन निकुंज इन परंपराओं का एक उत्तम उदाहरण है। उल्मान तथा अन्य[1] ने महाराष्ट्र के रत्नागिरी स्थित पवित्र निकुंज की जैवविविधता का अध्ययन, यादव तथा अन्य[2] ने हरियाणा के महेन्द्रगढ़ के पवित्र निकुंज का पादप जैवविविधता संरक्षण के योगदान का अध्ययन एवं ओडिसा के कोटापुट जिले के पवित्र निकुंज द्वारा संरक्षित पादप विविधता का अध्ययन पांडा तथा अन्य[3]द्वारा किया गया। पवित्र निकुंज में जनजातियों द्वारा औषधि के रूप में प्रयोग की जाने वाली वनस्पतियों का अध्ययन भक्त तथा सेनयू[4] ने किया। पवित्र निकुंजों की जैवविविधता के संरक्षण में योगदान को अनेक शोधकर्ताओं द्वारा स्थापित किया गया है। साथ ही मानव जाति के प्रकृति प्रेम व त्यागपूर्ण भोग की प्रकृति के व्यावहारिक अनुप्रयोग का अनूठा उदाहरण है। शर्मा तथा जोशी[5] द्वारा उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के स्थानीय निवासियों के धार्मिक तथा स्वास्थ्य रक्षा हेतु पवित्र पादपों की भूमिका का

अध्ययन किया गया। कंडारी व अन्य[6]द्वारा उत्तर भारतीय जनजातियों समुदायों के द्वारा पवित्र निकुंज के संरक्षण तथा प्रबंधन संबंधी व्यवस्था का अध्ययन किया गया। पंडित तथा भक्त[7] ने मिदनापुर, पश्चिम बंगाल के पवित्र निकुंज द्वारा जैवविविधता तथा जनजातिय संस्कृति के संरक्षण पर कार्य किया। सुकुमारन तथा राज[8] ने दक्षिणी पश्चिमी घाट के कन्याकुमारी जिलो में ग्रामीण समुदायों के पवित्र निकुंज के 34 औषधीय महत्व के पादपों का वर्णन किया। ब्रहमा तथा अन्य[9] ने असम के पवित्र निकुंज का विस्तृत विश्लेषण कर उनका सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी अध्ययन किया। तिवारी व अन्य[10] ने अपने अध्ययन में पाया कि अनेक राज्यों में बने पवित्र निकुंज में भगवान का निवास मान उसमें लगे वृक्षों का काटना प्रतिबंधित है। चौहान व अन्य[11] ये जनजाति समुदाय अपने दैनिक जीवन में आवश्यक महुआ, तेन्दू, ताड़ी सहित अनेक सामग्री वनों से प्राप्त करते हैं। आदिकाल से ही स्थानीय समुदायों मुख्यतः जनजातियों द्वारा विभिन्न रोगोपचार हेतु पवित्र वनों में मिलने वाली वनस्पतियाँ का उपयोग किया जाता है। गोड़बोले[12] ने आदिवासियों के पवित्र निकुंज के संरक्षण में महत्व को बताया तथा उन्होंने बताया कि भारत में पाये जाने वाले पवित्र निकुंज का धार्मिक महत्व है एवं वनोन्मूलन से संकट में आने वाले पादपों का संरक्षण भी पवित्र निकुंज से संभव हो सकता है। अनेक वनस्पतियों के औषधीय उपयोगों की जानकारी इन स्थानीय निवासियों को होती है। तथा यह ज्ञान एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। उत्तराखण्ड के वैद्यों द्वारा इन औषधीय पौधों का उपचार में प्रयोग किया जा रहा है(सेमवाल व अन्य[13])।

2. **सामग्री एवं विधि**– धार जिले की जनजातियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले औषधीय पौधे का अध्ययन करने के लिए भुवाडा बाबा के पावन निकुंज का सर्वेक्षण किया गया। धार मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग में स्थित हैं। उत्तर में मालवा, विन्ध्याचल क्षेत्र, मध्यक्षेत्र में तथा दक्षिण में नर्मदा घाटी भौगोलिक खण्डों में फैला हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति अक्षांश 22^0 1′ 14′′ से 23^0 9 49′′ उत्तर देशान्तर 74^0 28′ 27′′ से 75^0 42′ 43′′ पूर्व। धार जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 8,153 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार धार जिले की ग्रामीण जनसंख्या 413,221 तथा शहरी जनसंख्या 172,572 है। अर्थात जिले का लगभग 81.1 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण तथा लगभग 18.9 प्रतिशत शहरी क्षेत्र के अर्न्तगत आता है। इस क्षेत्र में भील, भीलाला, बारेला तथा पटलिया जनजाति मुख्य रूप से पायी जाती है। भुवाडा बाबा धार जिले से 140 किलोमीटर दूरी पर पावन निकुंज का स्थल है और तहसील से लगभग 3 किलोमीटर दूरी पर है। भुवाडा बाबा एक विशाल क्षेत्र में फैले हुये पहाड़ी पर बसा हुआ है। जो लगभग 15 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है और तीन गाँवों को जोड़ता है, जो नरझली, कंकरिया और गाजगोटा है। पावन निकुंज के समीप ही एक तालाब है और सड़क निकली हुई है।

3. **परिणाम–**

तालिका 1. भुवाड़ा बाबा पवित्र वन में पाये जाने वाले प्रमुख पादपों की सूची

क्र.स.	वनस्पतिक नाम तथा परिवार	स्थानीय नाम	स्वभाव; औषधीय तथा अन्य उपयोग
1.	*अकेशिया केट्चू* (एल. एफ.) विल्ड माइमासेसी	खयरीया, खैर	वृक्ष; कृषि से संबंधित यंत्र बनाने एवं पत्तियों को बकरी के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है।
2.	*अकेशिया ल्यकोफ्लोइया* (रॉक्स) विल्ड माइमासेसी	रिन्झा	वृक्ष; कृषि से संबंधित यंत्र एवं पत्तियाँ बकरी के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है।
3.	*अकेशिया नीलोटिका* (एल.) वाइल्ड एक्स डेलीले माइमोसेसी	बाबलिया, बबुल	वृक्ष; पत्तियों एवं टहनी को चबाने से मुँह के छाले एवं मसूड़े की सूजन ठीक हो जाती है।
4.	*अलान्जियम साल्विफोलियम* (एल. एफ) वेंग कोरनेसी	अक्लू, अंकोल, वाकली	वृक्ष; इसके पके फल को खाया जाता है।
5.	*एकाइरेन्थस एस्पेरा* लिन्. एमेरेन्थेएसी	झिंझण्डा, अपामार्ग	शाक; टहनी को दातून के रूप में इस्तेमाल करने से दांतो के दर्द में आराम मिलता है।
6.	*एक्टीनोप्टेरिस रेडीयटा* (स्वार्टज) लिंक टेरिडेसी	भूई ताड़	शाक (फर्न); दुधारू गाय और भैंस को भूई ताड़ खिलाने से दूध देने लग जाती है।
7.	*एल्बिजिया प्रोसेरा* (रॉक्स.) बेन्थ. मइमासेसी	गुराड़, सफेद सिरीश	वृक्ष; इसकी लकड़ी कृषि एवं घर के यंत्र बनाने में उपयोगी होती है।
8.	*ईगल मारमीलोस* (एल.) कोरिया रूटेसी	बिली, बिल्वा	वृक्ष; इसके फल खानें से पेट संबंधित विकार दूर होते हैं।
9.	*आइलेन्थस एक्सेल्सा* रॉक्सबर्ग सीमरोउबेसी	वोल्लू, महानीम	वृक्ष; इसके तने का ढोल एवं मन्दल बनाने में उपयोग होता है।

10.	*अलान्जीयम साल्वीफोलियम* (एल. एफ.) वांग कोरनेसी	अक्लू, अंकोल	वृक्ष; इसकी छाल को घिस कर लगाने से चर्म रोग दूर होता है तथा बिच्छू काटने पर इसकी जड़ की छाल को लगाने से दर्द में आराम मिलता है।
11.	*एलो वेरा* (एल.) बुरम.एफ लिलिएसी	पाठी, ग्वारपाठी	शाक; खाने से दुर्बलता दूर होती है। इसके पत्ते बांधने से पाठी (एक प्रकार बीमारी) ठीक हो जाती है।
12.	*एन्ड्रोग्राफिस पेनीकुलाटा* (बुरम. एफ)वालिच एक्स नीच एकेन्थेसी	भूई लिम	शाक; ज्वर में औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है।
13	*एन्नोना स्क्वेमोसा* लिन. एनोनेसी	सीताफल	वृक्ष; पत्तियों की पुल्टिस फोड़ों को पकाने के लिए बांधी जाती है। बीज कीड़े तथा जूओं को नष्ट करने में उपयोगी हैं।
14	*एनॉजिसस लेटिफोलिया* (डी.सी.) वेलिच. एक्स. बेडोने कोम्ब्रेटेसी	धावडा	वृक्ष; इसके तने से निकलने वाला डीक (गोंद) खाते हैं।
15	*एगेरिकस बाईसपोरस* (जे.ई. लेन्ज.) इमबेच एगेरीकेसी	सन्ती, मसरूम	कवक; सब्जी के रूप में प्रयोग किये जाते हैं।
16	*आर्जीमोन मेक्सिकाना* लिन. पेपवरेसी	कास्टूला, सत्यनाशी	शाक; इसकी जड़ को घिसकर पिलाने से पीलिया रोग ठीक होता है।
17.	*अरजिरिया नेरवोसा* (बुरम.एफ) बोजर. कोन्वोल्वूलेएसी	तामासीर, विधारा	लता; इसकी पत्तियों को जोड़ो की सूजन में बांधने से सूजन कम हो जाती है और दर्द में आराम मिलता है।
18.	*एस्पेरेगस रेसीमोसस* वाइल्ड लिलिएसी	दसमूल, सतावर	लता; शतावर का ताजे कंद का सत्त उत्तम टॉनिक का काम करता है। इसका सम्पूर्ण भाग पशुओं के चारे के रूप में उपयोग लाते हैं।
19.	*एजडायरेक्टा इण्डिका* ए. जूस. मेलिएसी	नीमड़ा, नीम	वृक्ष; इसकी टहनी को दातून के रूप में दांतो को साफ करने तथा इसकी पत्तियों को अनाज संग्रहण और मच्छरों को भगाने में उपयोग करते हैं।
20	*बकोपा मोन्नीयरी* (एल.) पेनल स्क्रोफूलेरीएसी	बाम, नीर, ब्राहमी	शाक; इस पौधे का उपयोग स्थाई रूप से पेट दर्द को ठीक करता है।
21.	*बाम्बुसा बाम्बोस* (लिन.) वोस पोएसी	बाँस	झाड़ीः तने का टोकरी, कणगी और टाटले बनाने में उपयोगकरते हैं।
22	*बेलेनिटेस ईजिप्टीका* (एल.) डेलीले बेलेनीटेसी	हींगनीय, हींगोट	वृक्ष; इसके बीज खाने से खासी और दमा रोग ठीक हो जाता है।
23	*बॉम्बैक्स सीबा* लिन. बॉम्बेकेसी	सेमला, सेमल	वृक्ष; इसके फूल का काढ़ा बनाकर पीने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं।
24	*बोरासॉस फ्लबेलीफेर लिन.* एरेकेसी	ताड़	वृक्ष; ताड़ की पत्तियों का उपयोग मकान की छत को बनाने के लिए या छाँव के लिए किया जाता है।
25	*बुटिया मोनोर्स्पमा* (लेमार्क) ट्यूब फेबेसी	खाखरी, पलाश	वृक्ष; इसके फूल को पानी में घोलकर नहाने से खुजली से मुक्ति मिलती है।
26.	*कैरिसा कैरेन्डस* वाइट. एपोसायनेसी	करौंदा	वृक्ष; इसके पके फल खाये जाते और कच्चे फल की सब्जी बनाकर खाते हैं।
27.	*कैलोट्रोपिस प्रोसरा* (एट.) आर. बर एस्क्लेपीएडेसी	आकड़िया, आक	झाड़ी; आक का दूध बिच्छू के काटने के स्थान पर लगाने से आराम मिलता है।
28	*कॅषीय ऑक्सिडेंटॅलिस*लिन. सिसलपिनेएसी	जंगली ग्वारफली, कसौन्दी	शाक; इसके बीज टायफाइड तथा पत्तियों को पीसकर लगाने से से खुजली ठीक हो जाती है।
29	*केसिया टोरा* लिन. सिसलपिनेसी	पूवाड़िया, पावर	शाक; इसकी ताजी पत्तियों का रस जलने एवं फफोले हो जाने पर लगाने से ठीक हो जाते हैं।
30	*क्लोरोफाइटम टुबेरोसम* (रोक्सब.) बेकर लिलिएसी	धवली मुसली,	शाक; इसकी जड़ें शक्तिवर्धक होती हैं।
31	*चिनोपोडियम एल्बा* लिन.	बथुआ	शाक; इसका उपयोग सब्जी बनाकर खाने के रूप मेंकिया जाता

	चिनोपोडियसी		है।
32	*सिस्सामपेलोस परेइरा* (लिन) वार हीरसूट मेनीर्स्पमेसी	फाट, पथ	लता; इसकी जड़ों का उपयोग विशनाशक के रूप में किया जाता है।
33	*सिलीस्ट्र पैनिकुलेटा* वाइल्ड सिलीस्ट्रेसी	मालकांगनी	लता; औषधीय उपयोगी होती है।
34	*सिसस क्वाड्राएन्गुलेरिस* लिन. विटेसी	हरजोड़	लता; अगर किसी जानवर की हड्डी टूट जाये तो पैराकली बांधने तथा खिलाने से जुड़ जाती है।
35	*क्लेरोडेन्ड्रेम मुल्टीफ्लोरम* (बुरम.एफ) कुन्टजे वर्बीनेसी	अरनी, वरनीया	झाड़ी; इसकी पत्तियों का लेप बनाकर जानवरों को चर्मरोग में त्वचा परलगाने से चर्मरोग ठीक हो जाता है।
36	*क्लेरोडेन्ड्रेम सेरातम* (एल.) मुन वर्बीनेसी	भारंगी	झाड़ी; इसकी पत्तियों और जड़ का उपयोग बुखार और शरीर के दर्द को ठीक करने में किया जाता है।
37	*कोकसिनिया इण्डिका वाइट एण्ड अर्न* *कुकरबिटेसी*	कुन्दरू	लता; इसका उपयोग सब्जी बनाकर खाने के रूप में किया जाता है।
38	*कोक्कुलस हीरसूट्स* (एल.) डाइल्स मेनीर्स्पमेसी	वंछान, वंछानिया	लता; इसकी पत्तियों का रस बच्चे को पिलाने से पेचिस और अम्लता दूर होती है। इसकी पत्तियों को सब्जी बनाकर खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है।
39	*कुरकुलीगो ऑरचीआईडेस* गायर्थ हाइपोक्सीडेसी	काली मुसली	शाक; इसकी कंदिल जड़े शक्तिवर्धक होती है।
40	*साईनोडोन डाक्टियाना* (एल.) पेयर्स पोएसी	सेड़ा खड	शाक; बिच्छू के काटने के स्थान पर चबा के लगाने से ठीक हो जाता है।
41	*डाइक्रोस्टेकिस सिनेरीया* (एल.) वाइट एण्ड अरन. माइमोसेसी	आरी	झाड़ी; इसकी कोपलों को पीसकर उठी हुई आँखों पर लेप करने से ठीक हो जाता है तथा इसके बीज और छाल का उपयोग लकवा बीमारी में होता है।
42	*डाईजेरा मुरीकेटा* (एल.)मार्ट एमरेन्थेसी	गुन्जरा	शाक; इसकी जड़ों को चबाने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं।
43	*डायोस्पाइरोस मेलेनोजाइलोन* रोक्सब. इबेनेसी	टेमरू, टेमरी	वृक्ष; इसके बीज खाँसी और श्वाँस रोग से सम्बधित रोगों के उपचार में उपयोगी होते हैं।
44	*ड्रेगिया वोलूबिलस(एल.एफ.)*बेन्थ इक्स. हुक. एफ. एस्क्लपिडेएसी	कड़वा डुडी	लता; इसका उपयोग सब्जी बनाकर खाने के रूप में किया जाता है।
45	*डोलिकस यूनीफ्लोरस* लिन. फेबेसी	कुलथी, कुलथिया	शाक; इसके बीज पथरी के इलाज तथा पशुओं को शक्तिवर्धन के रूप में किया जाता है।
46	*इहर्षिया लिविस लिइवीस* रॉक्सबर्ग बोराजिनेसी	तमोलिया	वृक्ष; इसकी पत्तियों और छाल को उबालकर नहाने और पिलाने से पीलिया की बीमारी ठीक हो जाती है।
47	*इनीकोस्टेमा एक्जीलर* (लम.) ए. रायनाल जेन्टीनेसी	डेढ़ पत्ती, नाई कई	शाक; इसकी पत्तियों का काढ़ा बनाकर पीने से ज्वर ठीक हो जाता है।
48	*ईलीटेरीया एक्यूलीस*(एल.एफ.) लिन्डायू एकेन्थेसी	बीस मुल, पत्थरचटा	शाक; इसका उपयोग दस्त के उपचार में किया जाता है।
49	*इथ्रिइना इण्डिका लिन.* बोराजिनेसी	कुतेड़ा	वृक्ष; इसके तने की राखसरदर्द के उपचार में उपयोगी है।
50	*यूफोर्बिया नेरिफोलिया* लिन. यूफोर्बिससी	थुहर	वृक्ष; इस वृक्ष की वट सावित्री व्रत में पूजा की जाती है।
51	*फाइकस बेंगालेंसिस* लिन. मोरेसी	वड, बड़, बरगद,	वृक्ष; इसके पेड़ को त्यौहारों के समय पूजा एवं इसके फल खाये जाते हैं।

52	*फाइकस विरेन्स* ऐट. मोरेसी	पिपरी	वृक्ष; इसके पके हुये फल को खाते है। इसकी हरी पत्तियाँको जानवरो के चारे के रूप में खिलाते हैं।
53	*फाइकस रेलिजिओसा* लिन. मोरेसी	पीपला, पीपल	वृक्ष; इसकी पत्तियाँ विवाह में पूजनीय होती है एवं पशुओं के चारे रूप में उपयोग होती है।
54	*फाइकस रेसिमोसा* लिन. मोरेसी	गूलर	वृक्ष; गूलर के रस (दूध) को गाय के घी में साथ मिलाकर मुँह में लगाने से छाले ठीक हो जाते हैं।
55	*ग्लोरिओसा सुपरबा* लिन. लिलिएसी	कलिहारी	शाक; औषधीय उपयोगी होती है।
56	*हेलिक्टेरेस आईजोरा* लिन. *माल्वेसी*	अटवाड़िया मरोडफली	शाक; बच्चा अधिक पैर हिलाता है तो इसको ठीक करने में इसका प्रयोग किया जाता हैं।
57	*होलराहेना एन्टीडीसेंटेरीका* (रोथ) ए. डीसी एपोसाइनेसी	कुड़ा, कुड़ी	वृक्ष; इसकी छाल पेचिस के बीमारी के लिए उपयोगी होती है।
58	*होलोप्टेलीया इन्टेग्रीफोलिया* (रोक्सब) प्लांच अल्मेसी	ओहला	वृक्ष; इसकी पत्तियों को जानवरों के खुरपका एवं मुहपका (कुकड़िया) रोग होने पर बांधने से ठीक हो जाता है तथा इसका रस आँखों के लिए बहुत उपयोगी है।
59	*जेट्रोफा कर्कस* लिन. यूफोर्बिएसी	अगरवेण्ड़िया, रतनजोत	झाड़ी; इसकी तने की दातून बनाकर करने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं एवं इसके पत्ते को जोड़ों पर बांधते हैं जिससे जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। गाय और भैंस की आँखों से पानी आनेपर इसका दूध डालने से ठीक हो जाते हैं।
60	*मैटेन्स इमरजीनाटा* (वाइल्ड) डींग होयू कैलास्ट्रैसी	बैंकल	वृक्ष; इसकी पत्तियों का रस कान में डालने से आराम मिलता है एवं इसको खाने से खांसी में आराम मिलता है।
61	*मधुका इण्डिका* जे. एफ. मेलिन सेपोटेसी	मवड़ा, महुआ	वृक्ष; इसके फूल खाने एवं किण्वन करके मदिरा बनायी जाती है जो पीने के काम आती है।
62	*माइमोसा पीडिका* लिन. माइमोसेसी	राजली, लाजवन्ती	शाक; त्वचा जल जाने पर इसकी पत्तियों का रस लगाने से आराम मिलता है।
63	*मोमोरडाइका डाइआइका* रॉक्सबर्ग कुकरबिटेसी	कंटला	लता; इसकी पत्तियों और कच्चे फल को सब्जी बनाकर खाने में किया जाता है।
64	*मोरिंगा ओलिफेरा* लामार्क मोरिंगेसी	सहजन, सेंगु,	वृक्ष; इसकी हरी पत्तियों एवं फली को सब्जी बनाकर खाते हैं।
65	*मिटरागायना पर्विफोलिया* रॉक्स. *रूबेसी*	कलम	वृक्ष; इसकी पत्तियाँ पूज्यनीय होती है।
66	*मेरिण्डा सिट्रीफोलिया* लिन. रूबेसी	हल्दिया, आल	वृक्ष; इसको पीलिया की बीमारी में प्रयोग करते हैं।
67	*मुकूना प्रूरीयन्स (एल.) डीसी. फेबेसी*	कवच	लता; इसके बीज को पीसकर बिच्छू के काटने पर लगाने से ठीक हो जाते है।
68	*लेन्टाना केमरा* लिन. वरबेनेसी	झाया	झाड़ी; इसकी शाखाओं से अनाज संग्रहण के लिये टटले और कणगी (कोठी) बनाये जाते हैं और घर की दीवार बनाने में भी उपयोग होता है।
69	*निक्टेनथीस आर्बोट्रिस्टिस* लिन. निक्टेनथेसी	सिरली, हरसिंगार	शाक; अनाज संग्रहण के लिए कणगी (कोठी) बनाने में प्रयोग किया जाता है।
70	*फॉइनिक्स एक्यूलीस* बच–हम. इक्स. रॉक्सबर्ग एरेकेसी	सिन्दी	वृक्ष; इसकी जड़ों को पीसकर पानी में घोलकर मुर्गी को पिलाने से इसकी बीमारी (हाडा) ठीक हो जाती है।
71	*फाइलेन्थस एमरस* स्कुमस एण्ड थोनन. यूफोर्बिएसी	भूई आवला	शाक; इसका सम्पूर्ण भाग पीलिया रोग के उपचार में उपयोगी होता है।
72	*पिथेसेलोबियम डल्से* (रॉक्स.) बेन्थम माइमोसेसी	चवल्या, जंगल जलेबी	वृक्ष; इसके फल खाने में और इसकी शाखाये खेतों के किनारे पर बागड़ के लिये उपयोग की जाती हैं।

73	*पोंगामिया पिन्नाटा* (एल) पियरे फेबेसी	करंज, कन्जी	वृक्ष; इसके बीज का तेल मलने से जोड़ो के दर्द में आराम एवं पत्तियों को उबालकर लेप बाँधने से जोड़ो के दर्द में आराम मिलता है।
74	*रीसिनस कॉम्यूनीस* लिन. यूफोर्बिएसी	वेड़िया	झाड़ी; इसकी पत्तियों को बांधने से किसी भी जगह दर्द हो तो आराम मिलता है और सूजन में गर्म करके बाँधने से तत्काल आराम मिलता है।
75	*साइजियम कुमीनी* (एल.) स्कील्स. मिर्टेसी	जांबू, जामुन	वृक्ष; इसकी पत्तियों को पीस कर छोटे बच्चों को पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं। इसके तने और छाल को घीस कर लागने से मुँह के छाले ठीक हो जाते हैं।
76	*टेमेरिन्डस इण्डिका* लिन. सिसलपियेनेसी	आमली, इमली	वृक्ष; इसके फल खाने में प्रयोग किये जाते हैं।
77	*टेक्टोना ग्राण्डिस* एल. एफ. वर्बीनिएसी	सागड़ा, सागौन	वृक्ष; इसकी पत्तियों का प्रयोग पत्तल बनाने में किया जाता है और विभिन्न प्रकार के त्यौहारों और मकान की छत या छाँव के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।
78	*टेफ्रोसिया परपूरिया* (एल.) पेयरस् फेबेसी	पेखारी, सरफोंका	शाक; इसका उपयोग पशुओं के पेचिस रोग को ठीक करने में किया जाता है।
79	*टर्मिनेलिया बेलिरीका* (गयर्थ) रॉक्सबर्ग. काम्ब्रेटेसी	बहेड़ा,	वृक्ष; इसकी पत्तियों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है।
80	*टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* (वाइल्ड)मीइरस मेनीर्स्पमेसी	गुलवेल, गिलोय	लता; गिलोय की बेल को गर्म पानी मे उबालकर पीने से ज्वर ठीक हो जाता है तथा जानवरों में अधिक दस्त में इसकी पत्ती एवं बेल को एक घण्टे तक पानी में रखने के बाद उसे छानकर देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।
81	*ट्राइडेक्स प्रोकुमबेन्स* लिन. एस्टेरेसी	खरवेड़िया परदशी लंगरी	शाक; अगर शरीर में चोट लगने से खून निकलने पर इसकी पत्तियों को निचोड़कर लगाने से तत्काल खून बन्द हो जाता है।
82	*ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस* लिन. जाइगोफाइलिएसी	गोखरू	शाक; इसके बीज को पीसकर त्वचा रोग में उपयोगी होता है।
83	*जिजिफस मारीटियना* लेमार्क रेहम्नेसी	बेर	वृक्ष; बेर के हरे पत्ते को गर्म पानी में थोड़ी देर रखकर उसको निचोड़कर कान में डालने से दांत दर्द में राहत मिलती है।

चित्र–1: अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र (मध्य प्रदेश तथा धार)

चित्र–2: भुवाड़ा बाबा का पावन निकुंज

तालिका–2: भुवाड़ा बाबा पावन निकुंज में पाये जाने वाले प्रमुख प्राणियों की सूची

क्र0सं0	वैज्ञानिक नाम	सामान्य नाम
1.	*एसीपिटर बैडियस* जीमेन	शिकरा
2.	*एक्रिडाकेथेरस ट्रिसटिस* लिन.	खालड़ाई, भारतीय मैना
3	*ब्यूबो–ब्यूबो* लिन.	उल्लू, घूघू
4.	*बुबुल्कस आईबीस* लिन.	गाय बगुला, मवेशी बगुला
5.	*कॉसमेरोडियसएल्बस*लिन.	बड़ा सफेद बगुला
6.	*कॉटर्निक्स–कॉटर्निक्स* लिन.	चनक, चीना बटेर, लावरी
7.	*डिक्रूरायेडी पराडाइसियस* लिन.	भीमराज, केन्चेला
8.	*यूडीनेमस स्कोलोपेसिय* लिन.	कोयल
9.	*हेलसायोन स्मिरनेंसिस* लिन.	किलकिला, करोना, खिटखिला
10	*पेसर डोमेस्टिकस* लिन.	घरेलू गौरेया, छोटी चिरी, घीमचेडी
11.	*पिक्टोनोनोटस कैफर* लिन.	बुलबुल, गुलदम
12.	*प्लोसियस फिलीपाइनस* लिन.	बया, सोनचिरी, हिंगलाधरी
13	*स्ट्रैप्टोपीलिया सैनेगेलेंसिस* लिन.	हँसता कबूतर, छोटा फाक्ता, हुल्गी
14.	*वेनेलस मालाबेरीकस* बोडडर्ट	टिट्हरी
15.	*सेन्ट्रोपस साइनोन्सिस* स्टफेन्स	डुच्चा, महोखा
16.	*फ्रैंकोलिनस ग्युलैरिस* टॅमिन्क	तीतर
17	*हरपेस्टिस स्मिथी* ग्रे	नेवला
18	*केनिस लूपस*लिन.	भेड़िया
19	*फेलिस चाउस* लिन.	जंगली बिल्ली

20	*वुल्पस बेगालेंसिस* शव	लोमड़ी
21	*फनाम्बुलस पल्मरुम* लिन.	गिलहरी, बुटी
22	*लेपस निगरीकोलीस* (एफ.) कुवीयर	सैसलिया, खरगोश
23	*हिस्ट्रील इण्डिका* केरर	साहली, साही
24	*वेरेनस बेंगाटिन्सीस* डवडीन	गुरफड, गोह
25	*कैमिलियन झेयलनीकस* लाउरेन्टी	गिरगिट
26	*टायस मुकोसा* लिन.	धामन
27	*नाजा–नाजा* लिन.	नाग, सर्प
28	*लेमप्रोफोलीस गुइचेनोटी* ग्रे	नगर बाबनी
29	*ऍपिस लिथोहमिया* लिन.	मुहल, मधुमक्खी
30	*जायलो कोपा*	भँवरा

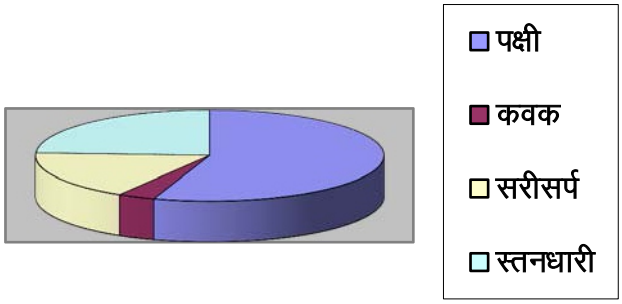

चित्र–3: भुवाड़ा बाबा पावन निकुंज में पाये जाने वाले विभिन्न प्राणी श्रेणियों का प्रतिशत

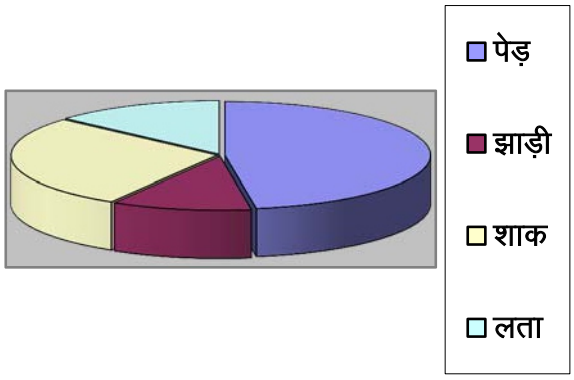

चित्रः–4 भुवाड़ा बाबा पावन निकुंज में मिलने वाले विभिन्न पादप श्रेणियों का प्रतिशत

4. **विश्लेषण**–प्रकृति संरक्षण जनजातियों की संस्कृति, दैनिक जीवन, मान्यताओं, परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों में रचा बसा है। इनकी इसी प्रवृति के कारण अनेक परिस्थितिक तन्त्रों को पावन निकुंज के रूप में संरक्षित रखा गया है। यह संकटग्रस्त पादप एवं जन्तु प्रजातियों के सुरक्षित स्थल हैं। पावन निकुंज वे प्राकृतिक क्षेत्र हैं जो हमारे पूर्वजों द्वारा संरक्षित किये गये हैं। जिनमें प्रमुख रूप से पादप प्रजाति तथा अन्य जीव संरक्षित रहते हैं।व्यक्तिगत साक्षात्कार में पवित्र वन के महत्व को बताते हुए उनमें मिलने वाले पौधे के औषधीय एवं अन्य कार्यों में उपयोग के बारे में वहाँ के बड़वे तथा वैद्यों ने बताया कि वन तथा वनौषधि हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हम अधिकतर वन औषधि का संग्रहण कर आवश्यकतानुसार रोग उपचार में उपयोग करते हैं।

चित्र तालिका–1: भुवाड़ा बाबा पवित्र वन क्षेत्र में पाये जाने वाली कुछ प्रमुख वनस्पतियाँ

सीताफल

तमोलिया

महुआ

बाँस

अगरवेण्डिया

गोखरू

सन्ती

तामासीर

चित्र तालिका–2: भुवाड़ा बाबा पवित्र वन क्षेत्र मेंपाये जाने वाले कुछ प्रमुख प्राणि

छोटी चिरी

गाय बगुला

भीमराज

महोख

किलकिला

बुलबुल

गिलहरी

चनक(अण्डे)

तीतर(अण्डे)

हुल्गी

भारतीय मैना अण्ड

साही

धामन

छोटी मधुमखी

बड़ी मधुमखी

5.निष्कर्ष– इस पवित्र स्थान (भुवाड़ा बाबा) में अनेक दुर्लभ वनस्पतियों भी पाई जाती हैं जो कि इन जनजातियों के संरक्षण संबंधित प्रवृत्ति के चलते अभी भी उपलब्ध हैं। भुवाड़ा बाबा के जनजातीय लोग अपने अनेक रोगों, चोट, घाव आदि हेतु इन स्थानीय वनस्पतियों का प्रयोग करते रहे हैं। अध्ययन के दौरान यह देखा गया कि स्थानीय समुदाय में इन पवित्र वनों के प्रति संरक्षण एवं सम्मान का स्थाई भाव समाहित है वे इसमें साक्षात ईश्वर का वास मानते हुये इनके संरक्षण की सामाजिक परंपरा को बखूबी निभाते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि वर्तमान समय में मानवीय रहवास लगातार बढ़ते जा रहे हैं और वन

क्षेत्र उसी गति से सिकुड़ते जा रहे हैं। ऐसे में इस प्रकार की व्यवस्था वास्तव में मानवीय अस्तित्व के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

संदर्भ

1. उल्मान, वाय0 एन0; मोकात, डी0 एन0 एवं तलाथी जे0 एम0(2008) बायोडायवर्सिटी ऑफ सेक्रेड ग्रोव्स इन रत्नागिरी, महाराष्ट्रः एशिया जर्नल ऑफ एन्वायरन्मेंटल साइंस, खण्ड–3, अंक–2, मु0पृ0 90–96।
2. यादव, एस0; यादव, जे0 पी0; आर्य, वी0 एवं पंघाल, एल0(2010) सेक्रेड ग्रोव्स इन कन्जरवेशन ऑफ प्लान्ट बायोडायवर्सिटी इन महेन्द्रगढ़ डिस्ट्रिक्ट ऑफ हरियाणा, इण्डियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, खण्ड–9, अंक–4, मु0पृ0 693–700।
3. पांडा, डी0; सेखर, बी0 एस0 एवं पलीता, शेरत के0(2014) फ्लोरल डायवर्सिटी कन्जरवेशन थ्रो सेक्रेड ग्रोव्स इन कोरापूट डिस्ट्रिक्ट उड़ीसा, इण्डिया–ए केस स्टडी, जर्नल ऑफ एन्वायरन्मेंटल साइंस, खण्ड–3, अंक–9, मु0पृ0 80–86।
4. भक्त, आर0 के0 एवं सेनयू, के0(2008) इथनोबॉटनिकल प्लांट कन्जरवेशन थ्रू सेक्रेड ग्रोव्स, ट्राइब्स एंड ट्रायबल्स (स्पेशल अंक), मु0पृ0 55–58।
5. शर्मा, वी0 एवं जोशी बी0 डी0(2010) रोल ऑफ सेक्रेड प्लान्ट्स इन रिलीजन एण्ड हेल्थ केयर सिस्टम ऑफ लोकल पीपुल ऑफ अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तराखण्ड स्टेट(इण्डिया) एकेडेमिक अरेना, खण्ड–2, अंक–6, मु0पृ0 19–22।
6. कंदारी, एल0 एस0; बिष्ट, वी0 के0; भारद्वाज, एम0 एवं ठाकुर, के0(2014). कन्जरवेशन एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ सेक्रेड ग्रोव्स, मिथ तथा बिलिफ ऑफ ट्रायबल कम्यूनिटीज–अ केस स्टडी फ्रॉम नार्थ इंडिया, एन्वायरन्मेंटल सिस्टम रिसर्च, खण्ड–3, अंक–16, मु0पृ0 1–10।
7. पंडित, पी0 के0 एवं भक्त, आर0 के0(2007) कन्जर्वेशन ऑफ बायोडायवर्सिटी एण्ड एथेनिक कल्चर थ्रो सेक्रेड ग्रोव्स इन मिदनापुर डिस्ट्रिक्ट, वेस्ट बंगाल, इण्डिया। इण्डियन फोरेस्टर। खण्ड–133, मु0पृ0 323–344।
8. सुकूमारन, एस0 एवं राज, ए0 डी0(2010) मेडिसिनल प्लान्ट ऑफ सेक्रेड ग्रोव्स इन कन्यकुमारी डिस्ट्रिक्ट, सदर्न वेर्स्टन घाट्स, इण्डियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, खण्ड–9, अंक–2, मु0पृ0 294–299।
9. ब्रह्मा, जे0; सिंह, बी0 एवं मान्दल, टी0(2014) सेक्रेड ग्रोव्स इन एनालिसिस मेड इन द कल्चरल परसपेक्टीव जहनोवी ब्रह्मा इट आल, जर्नल ऑफ बायोलॉजी एवं सांइटिफिक ओपिनियन, खण्ड–2, अंक–9, मु0पृ0 320–323।
10. तिवारी, बी0 के0; बारिक, एस0 के0 एवं त्रिपाठी, आर0 एस0(1999) सेक्रेड फॉरेस्ट ऑफ मेघालय बायोलॉजिकल एण्ड कल्चरल डायवर्सिटी/रीजनल सेंटर नेशनल, ए फारेस्टेशन एण्ड ईको डेवेलपमेंट बोर्ड इन ईएचयू शिलांग, मु0पृ0 1–120।
11. चौहान, ए0; त्रिपाठी, जे0 एवं डावर, एन0(2017) धार, म.प्र जिले की जनजातियों के जीवन शैली में बहुउपयोगी ताड़(*बोरेसस फ्लेबेलीफर* लिन्) की महत्ता का अध्ययन, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–5, अंक–1, मु0प्र0 61–66।
12. गोड़बोले, अर्चना(1996) रोल ऑफ इन प्रिजरवेशन ऑफ सेकर्ड फोरेस्ट्स ईथनोबायलॉजी इन हयूमन वेलफेयर, डीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, मु0पृ0 345–348।
13. सेमवाल, डी0 पी0; सारधी, पी0 पी0; काला, सी0 पी0 एवं सजवान, बी0 एस0(2010) मेडिसिनल प्लान्ट्स यूस्ड बाय लोकल वैद्याज इन उत्तराखण्ड ब्लॉक, उत्तराखण्ड, इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, खण्ड–9, अंक–3, मु0पृ0 480–485।